International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बस्तरः नामाभिधान का पुनरावलोकन

Shireen Lakhe

Retired, Muncipal Corrporation, Korba

संचार और भाषा मानव जीवन के अंग है. नाम भाषा की संरचना में सहायक होते हैं. नाम करण प्रायः चिरपरिचित शब्दों से होता है, ये शब्द कोरे शब्द नहीं होते, अपितु मानव के जीवन यापन, आचार–विचार, रीति–नीति कला–कौशल, आदि नानाविध अर्थों के वाहक होते हैं, दूसरे शब्दों में नाम संस्कृति के सारभूत अंश होते है.

नामों से मानव की धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, जैविक प्रवृतियों की अभिव्यक्ति होती है, मनुष्य अपने व्यवसाय, धर्म, भाषा, रीति रिवाज, रहन–सहन के अनुरूप नाम रखता है, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक नाम इन सबका का आख्यान करें एक चुने हुये क्षेत्र में कालविशेष एकत्रित अध्ययन करने पर उस क्षेत्र की तात्कालीन लोक संस्कृति का सरलता से ज्ञान हो सकता है.

नाम, फिर वह स्थान, व्यक्ति प्राकृतिक उपादान या कार्य–कलाप किसी का भी हो लेकिन उसकी उत्पत्ति सकारण ही होती है, गांधार की होने के कारण गांधारी, शैलपुत्री होने के कारण गिरिजा से लेकर राम के पुत्र लव द्वारा स्थापित होने के कारण बनने वाला आज के पाकिस्तान में लाहौर हो, नामों का आरोपण अमूमन किसी औचित्य को लिए हुए रहता है, ऐतिहासिक घटनाओं बल्कि दुर्घटनाओं के कारण भी नामकरण हुए हैं और इसका नजदीकी उदाहरण हमारे कोरिया जिले में मनेंद्रगढ़ बैकुण्ठपुर मार्ग पर पड़ने वाला ''जमदुआरी घाट'' है इस औचित्य की विविधता के कारण नामकरण अपने आप में अत्यंत रोचक, विषय बन जाता है, अब "डीह" का वास्तविक अर्थ तो अपने छत्तीसगढ़ में ऊँचे स्थान पर बने हुए घर होता है, परंतु अब यह शब्द प्रचलन में गाँवो के नाम लग गए, जैसे आमाडांड, बौरीडांड आदि अपने छत्तीसगढ़ में तो नामों के औचित्य में इतनी रंजक विविधता पायी जाती है जिसका वर्णन एक पुस्तक के लिए पर्याप्त विषय होगा, यहीं कुछ व्यक्ति – वाचक नामों के साथ भी होता रहा है, चूँकि मेरे संशोधन का विषय बस्तर क्षेत्र तक मर्यादित रहा है।

किसी भी सभ्यता का इतिहास से हमारा तात्पर्य उसके राजनैतिक, सामाजिक या सांस्कृतिक इतिहास से होता है, उसके इतिहास से पहले यह जानना आवश्यक है कि वह सभ्यता क्या है, उसका क्षेत्र कहां है या रहा है, वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ कैसी हैं या रही हैं, उस सभ्यता का विकास कब प्रारंभ हुआ और कैसे हुआ ।

बस्तर में दण्डकारण्य क्षेत्र में विकसित सभ्यता का अपृथक्करण अस्तित्व समय–प्रभावित रुप में विद्यमान है, "बस्तर नाम व्युत्पत्ति का संबंध किंवदंतियों से ही हैं ।

बस्तर न केवल आज वरन् कई दशकों से कई कारणों से विख्यात रहा है, गहन वनों की छाया में पलती लोक–संस्कृति के साथ बारुद के धुएँ से आच्छादित आकाश, उन्मुक्त जीवन के साथ अनिर्बंध शोषण तथा अतुलवन और खनिज संपदा के रहते इसकी लँगड़ाती प्रगति समय–समय पर चर्चा का विषय बनती रही है । 1

''बस्तर'' शब्द का प्रयोग विविध अभिलेखों तथा काव्य ग्रंथों में मिलता है, अभिलेखों में सर्वप्रथम इसका प्रयोग बस्तर के पूर्वी चालुक्य–युगीन दंतेवाड़ा अभिलेख में मिलता है, – काव्यों में सर्वप्रथम यह कोशलानंद महाकाव्य में प्रयुक्त हुआ है। 2

''बस्तर'' नाम की उत्पत्ति के संबंध में अनेक मत प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ अनुश्रुतिमूलक है, लाल कालीनद्र सिंह के अनुसार बस्तर 'वंशतीर' का अपभ्रंश है।

इस मत के समर्थकों के अनुसार वंश – गुलामों की प्रधानता के कारण ऐसानामपड़ा3

किन्तु बस्तर में वंश गुलामों की प्रथा के प्रचलन का वर्णन नहीं मिलता है, अतः ''वंशतीर'' से 'बस्तर' की व्युत्पत्ति भ्रामक जान पड़ती है। 4

दंडक क्षेत्र का उल्लेख ऋषी कवि वाल्मीकि ने रामायण (उत्तर काण्ड 78,80,81 सर्ग) मेंकियाहै। 5

पंडित केदारनाथ ठाकुर के अनुसार काकतीय वंश के अन्नमदेव जब वारंगल से चलने लगे, तो दंतेश्वरी ने उन्हें एक वस्त्र प्रदान किया और आशीर्वाद दिया कि उस वस्त्र को पहनने से वे विजयी होंगे। अन्नमदेव वस्त्र लेकर यहाँ वापस आए, उनके कुटुंबीगण भी यहीं रहने लगे। मालूम होता है कि इस ''वस्त्र'' से राज्य का नाम ''बस्तर'' पड़ गया। 6

वस्त्र से संबद्ध दंत–प्रथा से मिलते–जुलते कुछ और भीभेदमिलतेहैं, उनमेंसेकुछइसप्रकारहै– 7

1ण ''बस्तर'' के संबंध में एक किंवदंती है कि इस जनपद की अधिष्ठात्री दंतेश्वरी देवी को जब यह ज्ञात हुआ कि काकतीय वंश का शासक उनकी शरण में आया हुआ हैं, तब वे उसे लेकर उत्तर की ओर चली और उन्होंने एक नए राज्य की स्थापना हेतु एक लंबे क्षेत्र पर अपना वस्त्र फैला दिया, जितने भाग को दंतेश्वरी के वस्त्रों ने ढ़का 'बस्तर' नाम से विख्यातहुआ । 8

2० पुराण–प्रसिद्ध गोदावरी नदी को पार करके जब काकतीय वंश के राजा अन्नमदेव अपनी अज्ञात नियती की ओर बढ़ रहे थे तब गोदावरी नदी की जलधारा में उन्होंने बार–बार ठोकर लगने से झुककर उस वस्तु का स्पर्श किया, जो एक कांस्य–कलश था, जिसके अंदर दंतेश्वरी की प्रस्तर मूर्ति थी । राजा ने उसे तत्काल अपनी कुलदेवी मानकर उसके साथ गोदावरी को पार करके वर्तमान बस्तर की भूमि पर पैर रखा, कहते है कि उस मूर्ति ने रात्रि में राजा अन्नमदेव को दर्शन दिए और आशीर्वाद दिया कि उनके आँचल के छोर को पकड़कर राजपुरुष जहाँ–जहाँ जाएँगे, वहाँ तक उनके ''बस्तर'' एक नवीन राज्य की सीमा बनाएँगे, कहते है कि तभी से देवी के वस्त्रों की सीमा में बंधा हुआ उतुंगगिरि श्रृंखलाओं तथा इन्द्रावती जैसी प्रचंड वेगवाहिनी तथा बीहड़ वनों, घाटियों से युक्त यह भू–भाग ''बस्तर'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, वास्तव में वस्त्र का अपभ्रंश ही ''बस्तर'' है। 9

3० कुछमतावलम्बियोंकाकहना है कि जब रावण सीताजी का हरण करके उन्हें ले जाते हुए इस मार्ग से गुजरा, तब सीताजी ने चिन्ह – स्वरुप अपने वस्त्र यहाँ फेंक दिए, इसलिए आगे चलकर यही ''बस्तर'' कहलाया ।

4० के.सी. दुबे ने भी जिले के संबंध में उपर्युक्त दोनों मतों की चर्चा की है। 10

बस्तर नामकरण– संबंधी उपर्युक्त किंवदंतियों की दृष्टि में यद्यपि किसी प्रकार के प्रमाण नहीं मिलते, तथापि वस्त्र मूलक व्युत्पत्ति पर विद्वानों की अधिक आस्था हैं ।

एक मत के अनुसार ''बस्तर'' शब्द की व्युत्पत्ति ''वत्सर'' शब्द से हुई है, ''वत्सर'' (विष्णु का नाम, संस्कृत) एक पौराणिक नाम है तथा व्यंजन– विपर्यय से पूर्व– चालुक्य युग में वह ''वत्सर'' बना तथा कालांतर में ओष्ठ्य अर्धस्वर का परिवर्तन द्वयोष्ठ्य स्पर्श में होने से ''बस्तर'' शब्द बना ।

''बस्तर''का एक दूसरा नाम ''वासागुड़ा'' भी इस क्षेत्र में प्रचलित है, जिससे यह प्रतीत होता है कि ''वत्सर'' की मृत्यु के पश्चात वसु ने इसे अपनी राजधानी बनाया होगा तथा उसके नाम से उसका अपर अभिधान वासागुड़ा हुआ होगा । 11

बस्तर''बस्तरी'' शब्द का परिवर्तित रुप है । काकतीय राजवंश के प्रथम विजेता अन्नमदेव ने अपना अधिकांश समय बांसतरी अर्थात बाँस–वृक्षों के कुंजो में व्यतीत किया था, इसलिए उनके जीते हुए भू–क्षेत्र का नामकरण ''बस्तर'' हुआ है। 12

बस्तर नामकरण 'वस्तः' के कारण पड़ा, ''वस्तः'' शब्द का अर्थ है सरगी का वृक्ष बस्तर में सरगी के वृक्ष बहुतायत की मात्रा में मिलते है, इसलिए बस्तरकानामकरणबस्तरहुआ। 13

डॉ. हीरालाल शुक्ला के अनुसार पुराणकालीन ध्रुव के पुत्र ''वस्तर'' केशासन – क्षेत्र में आने के कारण यह क्षेत्र 'बस्तर' कहलाया । 14

हलबी बोली का एक शब्द है ''वसतोर'', जिसका अर्थ होता है– रहने के लिए संभवतः यही ''वसतोर'', कालांतर में 'बस्तर' हो गया होगा ।

बस्तर क्षेत्र की पहाड़ियों में सबसे ऊँची बैलाडिला की पहाड़ी हैं, यह पहाड़ी लौह–अयस्क के लिए विश्व–प्रसिद्ध है, समुद्रत्तल से इसकी ऊँचाई 4000 फुट है, संभवतः बैल के डिल के आकार का होने के कारण इसे बैलाडिला कहा गया है। 15

बस्तर के 2400 कि.मी. में फैले एक भू–भाग को अबुझमाड़ क्षेत्र कहा जाता है, ''अबुझमाड़'' हिन्दी के ''अबुझ'' और गोंड़ी के ''माड़'' शब्दों से मिलकर बना हैं, ''अबूझ'' का अर्थ होता है– अनजान और ''माड़'' का अर्थ होता है– पहाड़ी भूमि । इसलिए ''अबुझमाड़'' का शाब्दिक अर्थ हुआ – अनजान पहाड़ी भूमि। 16

बस्तर का सर्वप्रथम उल्लेख वाल्मीकि रामायण में मिलता हैं तब इसे दण्डकारण्य के नाम से जाना जाता था, महाकवि के अनुसार प्रसिद्ध चन्द्रवंशी सम्राट इक्ष्वाकु का सबसे छोटा पुत्र असंस्कृत एवं अशिक्षित होने के कारण ''दण्ड'' कहलाता था, उसने विंध्य और शैवाल की पर्वतीय श्रृंखलाओं के मध्य अपना राज्य कायम किया । वहाँ अपने गुरु शुक्राचार्य की सहायता से बहुत समय तक राज्य किया । गुरु– कन्या ''ऊर्जा'' का शील भंग करने पर दण्ड शुक्राचार्य द्वारा शापित किया गया, फलस्वरुप उसका सब कुछ नष्ट हो गया, कालांतर में यह क्षेत्र वनों से भर गया, यहीं क्षेत्र दण्डकारण्य कहलाता है ।

पुराणों में इसे शालवन नाम दिया गया है, उससे कई जनपद शामिल थे, इनमें शबर, माल, मुरल तथा वत्सर प्रमुख है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व यह क्षेत्र पोड़श महा जनपदों के अंतर्गत था ।

समारोप करते हुए यहीं कहा जा सकता है कि ''नामकरण'' ये एक अत्यंत विस्तृत विषयवस्तु है जो निश्चितही संशोधन कर्ताओं के लिए आकर्षक है, फिर भी इस पर अत्यल्प काम हुआ है, ये सच है कि अपने छत्तीसगढ़ में संशोधन के लिए भरपूर क्षेत्र उपलब्ध है और एक दृष्टी से यह वनांचल प्रदेश अभी भी आविष्कृत होने का ही है। इस हेतु शासकीय प्रयासों की अधिक आवश्यकता है वैसे ही शिक्षा संस्थाओं को भी इस हेतु अपने प्रयास बढ़ाने होंगे, अपना प्रदेश न सिर्फ राष्ट्रीय अपितु अंतर्राष्ट्रीय पटल पर आने योग्य है और आना भी चाहता है तथा उसके लिए यहाँ सब कुछ संसाधन जैसे विषयवस्तु संशोधनकर्ता, योग्य संस्थाएं आदि उपलब्ध हैं, जरुरत है तो सिर्फ प्रयासों की अपनी स्तुति नहीं करता लेकिन जिस समय हमने ये कार्य किया उस समय (30 से 35 वर्ष पूर्व) संदर्भग्रंथ, ऐतिहासिक जानकारीयाँ, परिवहन के साधन और शैक्षणिक दृष्टिकोण आदि साधन पर्याप्त नहीं थे लेकिन आज ये कमियाँ दूर हो गयी हैं, इसका लाभ उठाया जाना चाहिए, इसके लिए योग्य व्यक्तियों का आवाहन करता हूँ ।

आभार सहित धन्यवाद !

संदर्भसूची

1. मनीष राय एवं बलराम, संपा. इंद्रावती (नई दिल्लीः प्राची प्रकाशन 1982)
2. डॉ. हीरालाल शुक्ल, बस्तर का सांस्कृतिक इतिहास (नागपुर विश्वभारतीप्रकाशन,1978)चतुर्थ
3. लाल कालेन्द्र सिंह, बस्तर राजवंश का इतिहास (अप्रकाशित 1908). 4. डॉ. हीरालाल शुक्ल वही, प्रथम पृ. 387.
5. कन्हैया लाल पाण्डेय, बस्तरः भौगोलिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ, वनश्री बस्तर विशेषांक, (अक्टुबर–1971),
6. पं. केदारनाथ ठाकुर, बस्तर भूषण (वाराणसी रू 1908), पृ. 134.
7. डॉ. हीरालाल शुक्ल, वही.
8. नर सिंह राम शुक्ल, बस्तर विशेषांक, सजनी, (12 मई 1963).
9. ओंकार शरद, बस्तर इतिहास, तथ्य, जनश्रुतितथादस्तावेज (इलाहाबादःराजरंजनाप्रकाशन, 1961).
10. K-C- Dubey] District Census Handbook] Bastar District (Indore: 1964)] P- XXXII
11. प्रवीर चंद भंजदेव, लोहाण्डी गुड़ा तरंगिणी.
12. छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेटस पृ. 25.
13. लाला जगदलपुरी, स्थानीय साहित्यकार के अनुसार भेंटवार्ता (1976)
14. डॉ. हीरालाल शुक्ल, वही पृष्ठ
15. पंडित केदारनाथ ठाकुर, वहीं
16. पंडित केदारनाथ ठाकुर, वहीं